राज्य अध्याय 38

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यशायाह 55, 58, 59 और 61**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 55,58,59 और 61) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[परमेश्वर के संसाधन]*** **(2) भजन. 119:105**

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(2) परमेश्वर का वचन: भजन 119:105. "तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है।"

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 11:1-36**

परिचय। एक साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 9 हमें शिक्षा देता है की यह परमेश्वर की योजना कभी नहीं थी की वह प्राकृतिक रूप में इस्राइल के हर एक जन को बचाए या उद्धार करे। (रोमियों 9:6; तुलना करें व्यवस्थाविवरण 7:6-10) परमेश्वर की सिद्ध योजना यह रही है कि जिसे उसने अपनी योजना के तहत चुना है उनका वह उद्धार करे, अर्थात उनका जो उस पर विश्वास करते हैं (रोमियों 9:11; तुलना करें प्रेरितों. 13:48, 2तीमुथियुस 1:9-10) (रोमियों 9:11; तुलना करें प्रेरितों 13:48; 2तीमुथियुस 1:9-10)।

रोमियों 10 में वर्णन किया गया है की एक राष्ट्र के रुप में इस्राइल क्यों विफल हुआ। यहूदियों ने यीशु मसीह और उसके द्वारा किये गए उद्धार के सम्पूर्ण कामों पर विश्वास करने की बजायए व्यवस्था के कामों को पूरा करके उद्धार पाने का प्रयास किया।

रोमियों 11 सिखाता है कि चुने हुए इस्राएलियों और चुने हुए गैर यहूदियों के साथ परमेश्वर की सिद्ध योजना जरूर पूरी होगी। इस्राएलियों की परिपूर्णता और गैर यहूदियों की परिपूर्णता जरूर उद्धार पाएगी।

कदम 1. पढ़ें।	**परमेश्वर का वचन**
आइये एक साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 तक पढ़ें। आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।	

कदम 2. खोजें।	**अवलोकन**
ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है? या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ? ***लेखा।*** प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। ***साझा करें।*** (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है। (याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)	

11:1.24

खोज 1. **परमेश्वर के उद्धार की योजना के अन्तर्गत इस्राएल के राष्ट्र और गैर यहूदी राष्ट्रों के बीच एक अद्भुत बातचीत है।**

(1) रोमियों 11:1-10 में इस्राएल के छुड़ाए गये लोगों के चुनाव (पद 5)तथा बाकि लोगों के हृदय कठोर रहने (पद 7) का वर्णन किया गया है।

इस्राएल राष्ट्र की अधूरी तस्वीर। पौलुस के समय में इस्राएल राष्ट्र की तस्वीर यही थी कि वह एक अनाज्ञाकारी और हठीला देख है। इसलिए बहुत से लोगों को मानना है कि परमेश्वर ने *हमेशा हमेशा के लिए* इस्राएल को त्याग दिया है (ग्रीक: apótheó) (वचन 1) और अब गैर यहूदी देशों ने इस्राएल की *जगह ले ली* है। लेकिन पौलुस दिखाता है कि यह तस्वीर अधूरी है।

परमेश्वर ने अपने लोगों को कभी नहीं त्यागा है। पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को कभी नहीं छोड़ा। "अपने लोगों" से परमेश्वर का मतलब इस्राएल का हर एक नागरिक नहीं है, वरन वहां के उन लोगों से है, जिन्होने प्रभु पर और मसीह पर विश्वास किया है। इस बात का प्रमाण निम्नलिखित है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा है:

- पौलुस स्वंय भी एक इस्राएली था
- इस्राएल के इतिहास में सदैव परमेश्वर ने अपने "अपने छुड़ाए हुए" लोगों को अलग किया है जिन्होंने कभी मूर्तियों के सामने कभी दण्डवत नहीं किया। (रोमियों 11:1-4; तुलना करें यशायाह 1:9; जकर्याह 13:7-9; इब्रानियों 3:11-12, 18-19)
- इसी प्रकार से प्रथम शताब्दी में भी ऐसे लोग थे जिन्हें "अनुग्रह से चुना गया था" (रोमियों 11:5)। (उदारहरण के लिए, प्रेरितों की पुस्तक में ऐसे बहुत से यहूदी हैं जिन्होनें मसीह पर भरोसा किया था)।

ये सभी "छुड़ाए गये लोग" मिलकर हर एक काल में ऐसे इस्राएल का निर्माण करते हैं जिनको उद्धार दिया जाएगा। (रोमियों 11:26) । इसके अलावा भविष्य में भी परमेश्वर लगातार यहूदियों का उद्धार करते रहेंगें। हर एक काल में उसने अपने

“छुड़ाए गये लोगों” को बचाकर रखा है। ये बचे हुए लोग एक साथ मिलकर “इस्राएल की परिपूर्णता” का निर्माण करते हैं। (रोमियों 11:12)।

पहले ही नये नियम में प्रथम शताब्दी के दौरान बहुत बड़ी संख्या में यीशु मसीह में विश्वास कर लिया था। (प्रेरितों 2:14,47; 4:4; 5:14; 6:1,7; 9:31,35,42; 14:1; 17:12) (तुलना करें रोमियों 1:16; 3:30; 4:12; 5:18.19; 7:4; 9:6,24,27,29; 10:1,11-13,16)।

हर एक काल में इस्रासल देश के नागरिकों में से “छुड़ाए हुए लोग” होंगे जिनका उद्धार होगा। जितनी आशा अन्यजातियों में से लोगों के बचने या उद्धार पाने की है उनती ही आशा यहूदियों की भी है। “चाहे इस्राएलियों की संख्या चाहे समुद्र के बालू के किनको के बराबर ही क्यों न हो जाए, उद्धार या छुटकारा केवल “छुड़ाये गये” लागों का ही होगा। (रोमियों 9:27)! केवल संसार के इतिहास के अन्त में जाकर ही परमेश्वर के उद्धार की तस्वीर की योजना पूर्ण होगी।

परमेश्वर ने प्रत्येक यहूदी को उसके लोग होने के लिये नहीं चुना। इसलिये यह बात भी सत्य है कि इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास में, बहुत से यहूदियों ने बाइबल के परमेश्वर के प्रति अपने हृदय को कठोर कर रखा है। परिणाम स्वरूप परमेश्वर ने उनके मनों को कठोर कर दिया है। (रोमियों 11:7-10)! यह काम पहले ही हो चुका हैः

- मूसा भविष्यद्वक्ता के दिनों में (1527-1407 ई.पू.) (व्यवस्थाविवरण 29:2-4)
- एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (845 ई.पू.) (1राजाओं 18:81-21)
- होशे भविष्यद्वक्ता के दिनों में (754-714 ई.पू.) (होशे 1:6,9)
- याशायाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (740-680 ई.पू.) (यशायाह 1:9; 6:9-10; 8:14; 10:22)
- यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (627-550 ई. पू.) (यिर्मयाह 5:19,30-31)
- जकर्याह भविष्यद्वक्ता के दिनों में (520-518 ई.पू.) (जकर्याह 13:7-9)
- यीशु मसीह के दिनों में (पहली शताब्दी ई.पू.) (यूहन्ना 1:11; 5:39-40)
- प्रेरितों के दिनों में (प्रेरितों 7:51-53)
- और “वर्तमान समय में भी” ऐसा ही हो रहा है (रोमियों 11:8ब)

हर युग में ऐसे यहूदी पाए जाते हैं जो यीशु मसीह और उसकी धार्मिकता का इन्कार करते हैं।

रोमियों 11:9-10 उन लोंगो के उस दंड के बारे में बताता है जिन्होंने परमेश्वर व् उसके सन्देश के प्रति अपने आप को कठोर बना लिया है।

ऐसे लोंगो की कठोरता को समझ पाना आसन नहीं है।

एक तरफ तो “कठोरता” का अर्थ है:

- कि परमेश्वर अद्भुत तरीके से कुछ विशेष लोगों से अपने अनुग्रह को हटा लेता है। (रोमियों 9:18)
- लोग “परमेश्वर के अनुग्रह से दूर हो जाते हैं” (गलातियों 5:4)
- लोग “परमेश्वर के अनुग्रह को गवा देते हैं” (इब्रानियों 12:15-16)

दूसरी तरफ “कठोरता” का अर्थ होता है :

- कि परमेश्वर अद्भुत तरीके से लोगो को उनका हृदय कठोर करने के कारण (उनके अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण) उन्हें दंड देता है। (रोमियों रोमियों 1:18,25,28; इब्रानियों 4:2,6)

पुराने नियम में बहुत से यहूदियों ने अपने हृदयों को न केवल भविष्यद्वक्ताओं के प्रति (रोमियों 10:21; इब्रानियों 3:7-11; मत्ती 21:34-36) वरन नये नियम में यीशु मसीह व उसके संदेशों और उसके सहकर्मियों के प्रति भी कठोर किया (मत्ती 12:2,7,10,14,24; 13:11-15; 21:43-45; प्रेरितों 7:51)। ये यहूदी लोग व्यवस्था के कामों से धार्मिकता को कमाने का प्रयास करते थे, वे यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा धार्मिकता मिलने पर विश्वास नहीं करते थे (रोमियों 9:30-33; इफिसियों 2:8-9) इसलिए उसने उनके मनों को कठोर करके उन्हें अपने शक्ति और क्रोध दिखाने का निर्णय लिया (रोमियों 9:22,18)।

(2) रोमियों 11:11-15 यहूदियों और गैरयहूदी देशों के बीच में वर्तमान <u>बातचीत</u> को दर्शाता है।

पौलुस "अस्थाई कठोरता" के बारे में ही नहीं, वरन "आंशिक कठोरता" के बारे में भी लिखता (रोमियों 11:26)। यहूदियों के ठोकर खाने को (ग्रीक: ptaió) (ग्रीक: piptó) (पतन) की संज्ञा नहीं दी जा सकती (अर्थात एक ऐसा स्थान जहाँ उन पर अनुग्रह न हो सके) (ग्रीक: piptó) (aorist, subjunctive), लेकिन यहूदियों के "अपराधों" (ग्रीक: paraptóma) (अविश्वास) के कारण अन्यजातियों को उद्धार प्राप्त हो गया। गैर यहूदियों की बातचीत ने इस्राएलियों के मन में डाह उत्पन्न की (रोमियों 11:11)।

पौलुस :

- एक यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की *अटल या स्थायी* कठोरता के बारे में बात नहीं करता है (रोमियों 11:11)
- और वह न ही यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की अस्थायी कठोरता के बारे में बोलता है (रोमियों 11:25)
- परन्तु वह यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल की *आंशिक* कठोरता (ग्रीक: pórósis apo merous) के बारे में बात करता है।

इस अभिव्यक्ति का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने इस्राएल को हमेशा के लिए अपने दिल से उतार दिया है और उसके लिए अब कोई मौका[1] नहीं है (ग्रीक: apótheó) (रोमियों 11:1)।

और न ही इस अभिव्यक्ति का यह अर्थ है कि परमेश्वर ने कुछ समय के लिए अपने मन को कठोर कर लिया है(अर्थात यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले के "महाक्लेश के समय में") लेकिन इस्राएल (यहूदियों के राष्ट्र के रूप में) फिर से बन कर खड़ा हो जाएगा।[2]

<u>इस्राएल का पतन (अनुग्रह से वंचित) "स्थायी" और न ही "अस्थायी" है वरन वह "आंशिक" है।</u> विश्वास करने वाले विश्वासी

---

[1] कुछ लोगों के द्वारा सिखाया जाता है कि यहूदियों का मन हमेशा के लिए कठोर हो चुका है। उनका कहना होता है कि "इस्राएल" को कलीसिया से प्रतिस्थापित कर दिया गया है। लेकिन <u>यह प्रतिस्थापित करने वाला सिद्धान्त बाइबल आधारित नहीं है।</u> न तो "इस्राएल" को *त्यागा* गया है और न ही उन्हें *प्रतिस्थापित* किया गया है, (यह कोई परछाई होने की बजाय वास्तविकता है कुलुस्सियों 2:16-17; इब्रानियों 9:8-10) वरन उनके आकार में वृद्धि की गयी है अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले गैर मसीहियों को भी उनमें मिला दिया गया। इसके अलावा यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक वास्तविक यहूदी भी उस पर विश्वास करते रहेगें। (मत्ती 24:34)।

[2] "इस्राएल देश के अस्थायी रूप में कठोर होने" की शिक्षा भी समयवादी लोगों के द्वारा सिखायी जाती है।

<u>5वां युग</u> ("व्यवस्था का युग") यह मूसा और यीशु के बीच का युग था। युगवादियों के अनुसार यहूदियों को व्यवस्था का पालन करने के कारण धर्मी कहा जा सकता है।

<u>6वां युग</u> ("अनुग्रह का युग या कलीसिया का युग") यह यीशु मसीह के प्रथम आगमन और उसकी प्रथम वापसी कहे जाने वाले युग का समय है। (पारोउसिया या कलीसिया के उठाये जाने का समय)"। इसके बाद गैर यहूदी लोग यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह से धर्मी ठहरे, लेकिन ज़्यादातर यहूदियों का हृदय फिर भी कठोर बना रहा (अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण)।

<u>7वां युग</u> (सहस्त्राब्दी राज्य का युग) यह काल यीशु के दूसरे आगमन (अपोकालिपसिस या प्रकाशितवाक्य) से "श्वेत सिंहासन क सामने न्याय" के काल के बीच का समय है।

फिर सारा यहूदी राष्ट्र इस्राएल उद्धार पायेगा और वह यरूशलेम से लेकर जगत के छोर तक राज्य करेगा। <u>युगवाद बाइबल आधारित नहीं है।</u>

या बाकि के इस्राएलियों (परमेश्वर के लोगों को) (रोमियों 9:6ब) को परमेश्वर ने त्यागा नहीं है।

बाइबल का पिछला खण्ड (रोमियों 11:1-10) "परमेश्वर द्वारा विश्वासियों के चुने जाने" के बारे में बताता है (रोमियों 11:5) (ग्रीक: leimma, limmatos, सीमा से तुलना करें)। "बाकि के" इस्राएलियों को (ग्रीक: loipos) के हृदय को कठोर कर दिया गया है (रोमियों 11:7) और "बाकि बचे" का अर्थ है कि इस्राएलियों में से सभी रह गये लोग। ठीक इसी प्रकार से गैर यहूदियों में भी कुछ देशों को चुना गया है जबकि बाकि का भाग या देशों को नहीं चुना गया है (यूहन्ना 13:18; रोमियों 8:29-30,33; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9.10; 2तीमुथियुस 2:19)।

बाइबल का यह खण्ड न ही *यहूदी राष्ट्र* के सम्पूर्ण अस्वीकार किये जाने को दर्शाता है और न ही स्वीकार किये जाने के बारे में वरन यह *आंशिक तौर पर अस्विकार और स्वीकार किये जाने* के बारे में दर्शाता है। इसका अभिप्राय अस्थायी या स्थायी पतन से नहीं, वरन आंशिक पतन से है। यहूदियों को "अपराध" (ग्रीक: paraptóma) के कारण "उद्धार" गैर यहूदियों को भी प्राप्त हो गया है ताकि यहूदियों में जलन (रोमियों 11:11) पैदा की जा सके। यदि यहूदियों के आंशिक "अपराध" (पतन) और "पराजय" (ग्रीक: héttéma) गैर यहूदियों के लिए आशीष ठहर सकती है तो (मृतकों में से जी उठने की आशीष) चुने हुए यहूदियों की परिपूर्णता (ग्रीक: to pléróma) कितनी बड़ी आशीष ठहरेगी (रोमियों 11:12)? यदि आंशिक तौर पर यहूदियों का "अस्विकार किया जाना" (ग्रीक: to apobolé) अन्यजातियों के लिए "मेल मिलाप" (ग्रीक: katallagé) ठहर सकता है तो फिर चुने हुओं को "ग्रहण किया जाना" (ग्रीक: proslémpsis) "मृतकों में से जी उठने के बराबर" क्यों न ठहरेगा। (यहेजकेल 36:25-27; 37:14; लूका 15:24,32 और इफिसियों 2:1,5; 5:14)।

अगला बाइबल खण्ड (रोमियों 11:17-24) केवल विश्वास करने वाले यहूदियों (गैर यहूदियों) के जड़ (जो कि यीशु मसीह है) और जैतून के वृक्ष (जिसका अर्थ उसके लोग व कलीसिया है) (1कुरिन्थियों 12:13) से जोड़े जाने अर्थात कलम लगाये जाने के बारे में बात करता है, लेकिन विश्वास न करने वाले यहूदी जैतून के पेड़ से अलग रहते हैं।

आंशिक अस्विकृति और आंशिक स्वीकृति में अन्तर (रोमियों 11:12,15)। 12 से लेकर 15 वें पद *के बीच में किसी भी क्रिया का इस्तेमाल नहीं किया गया है जिससे हम वर्तमान और भविष्य काल में अन्तर बता सकें।* लोग अन्दाज़ा नहीं लगा सकते कि यह भविष्य के बारे में बात की जा रही है। क्योंकि विषय वस्तु वर्तमान की बात करती है भविष्य की नहीं।

पहले का सन्दर्भ (रोमियों 11:1-10) और बाद का सन्दर्भ (रोमियों 11:17-24) यह दर्शाता है कि पौलुस अन्य समय में होने वाली किसी घटना के बारे में बातें नहीं कर रहा है, वरन वह उन घटनाओं के बारे में बातें कर रहा है जो वर्तमान में हो रही हैं, अर्थात यीशु के प्रथम आगमन के समय की बातें से लेकर (पौलुस का समयकाल था) मसीह के दूसरे आगमन तक के बीच की बातें (अन्त समय की बातें), जब इस्राएल के चुने हुओं में से उद्धार पाये (रोमियों 11:12, 26) तथा गैर यहूहियों में से बचें हुओं के परिपूर्ण होने (या उनकी संख्या के पूरे हाने का समय) का समय आ जाएगा (रोमियों 11:26)।

रोमियों 11:25-26 हमें स्पष्ट तौर पर बताते हैं कि सारे देशों के उद्धार पाये हुए लोगों की संख्या जिसमें इस्राएल के लोग भी शामिल हैं एक साथ ही पूरी होगी। ग्रीक शब्दकोष के अनुसार ग्रीक शब्द "काई आउटोस"(रोमियों 11:26) का अनुवाद " और तब " (जिसमें समय की ओर संकेत किया गया हो) के रूप में नहीं वरन उसका अनुवाद एक शब्द के रूप में किया गया हो " और फिर (इस तरीके से) (जो एक व्यवहार की ओर संकेत करता है)। जिस प्रकार से 7000 छुड़ाये हुए लोगों में से एलिय्याह भविष्यद्वक्ता (रोमियों 11:4) "एक अलग किया हुआ" था ठीक उसी प्रकार से (ग्रीक: outós) उनका छुटकारा

देना वाला सिय्योन (इस्राएल) से आया ताकि वह अपने पहले आगमन पर (यूहन्ना 4:22) याकूब से अपनी कृपा को दूर कर दे। केवल विश्वासी लोगों को ही उद्धार हुआ था - लेकिन बाकि लोगों के हृदय कठोर ही बने रहे थे। अतः प्रेरित पौलुस के समय में भी बहुत से अलग किये हुई लोग (यूनानी: outós) थे। इसलिए हर एक काल में यहूदियों में छुड़ाये और अलग किये हुए लोग होते हैं और यह तब तक होता रहेगा जब तक कि उनकी गिनती पूरी न हो जाए और ठीक इसी प्रकार से उसी समय में अन्यजातियों में से विश्वास में आने वाले लोगों की गिनती पूरी हो जाएगी। इस तरीके से (यूनानी: outós) "सारा इस्राएल" उद्धार पाया हुआ है।

यहां पर "सब" का अर्थ धरती पर पैदा हुए हर एक यहूदी से नहीं है, वरन यहूदियों में से वे सभी लोग जिन्होंने याकूब की बजाय यीशु को (तुलना करें रोमियों 5:15.19) अपना प्रतिनिधि माना है।

अन्यजातियों के विश्वास करने के द्वारा यहूदियों में जलन पैदा होगी (रोमियों 11:13-14)। पौलुस "अन्यजातियों का प्रेरित "में उसकी वर्तमान सेवाकाई को लेकर बहुत गर्व महसूस करता है, जिसके द्वारा वह यहूदियों में जलन को उत्पन्न करता है और उम्मीद करता है कि इसका परिणाम यहूदियों को उद्धार होगा (रोमियों 11:13; तुलना करें 1कुरिन्थियों 9:19-22)। अगर यहूदी लोग अपने अविश्वास से अफर जाएं तो सारे जगत और सारे इतिहास के यहूदियों को उद्धार हो जाएगा (रोमियों 11:23)। पौलुस स्पष्ट तौर पर कहता है कि इस्राएल में रहने वाले यहूदियों को "अब" अर्थात पौलुस के जीवन काल में परमेश्वर की ओर से अनुग्रह प्राप्त हो रहा है (रोमियों 11:30-31)।

परमेश्वर के उद्धार की अद्भुत योजना यह है कि यहूदियों के विश्वास किये बिना गैर यहूदियों को उद्धार नहीं होगा और गैर यहूदियों के विश्वास किये बिना यहूदियों का उद्धार नहीं होगा (रोमियों 11:15)! जिसका अर्थ यह है कि, "यदि उनके अस्वीकृत होने की वजह से सारे संसार का परमेश्वर से मिलाप हो गया है तो उनके स्वीकार किये जाने का परिणाम मृतकों में से जी उठना क्यों न होगा? भौतिक रूप में इस्राएल के आंशिक अस्वीकृत होने के कारण सम्पूर्ण भौतिक देशों को परमेश्वर के साथ "मेल" करने का अवसर मिल गया है। यीशु मसीह अपने पहले आगमन से ही "संसार का उद्धारकर्ता है" (यूहन्ना 4:42) यहां पर "संसार" का अभिप्राय जगत में पैदा हुए हर एक मनुष्य से नहीं है, लेकिन उनमें सारे चुने हुए यहूदी (पूरे यहूदी), चुने हुए सामरी (आधे यहूदी) और सारे अन्यजातियों (गैर-यहूदी) के लोग शामिल हैं।

जैसा कि हम देख सकते हैं कि प्रेरितों 13:44-48, 18:6 और 28:23-28 में देखा जा सकता है, यहूदी राष्ट्र के एक भाग की अनाज्ञाकारिता ने समय समय पर संसार भर के अन्य यहूदियों (उदाहरण के लिए, प्रेरितों ने) द्वारा सुसमाचार प्रचार को बढ़ावा दिया है। जिसका परिणाम यह हुआ कि संसार भर में अन्यजातियों (गैर यहूदियों) (सारे अन्यजाति लोग नहीं) में से बहुत से लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने लग। विश्वास करने के द्वारा उनका मेल प्रभु से और प्रेम के कारण उनका मेल इस्राएल में रहने वाले विश्वासी यहूदियों से हो गया है (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6)।

परमेश्वर की सुन्दर योजना में, अन्यजातियों का उद्धार हमेशा यहूदियों में जलन को उत्पन्न करेगा (रोमियों 11:13-14) और इस तरह से बहुत से यहूदी लोग भी यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त कर लेगें (रोमियों 11:31)[3]। परमेश्वर के उद्धार की योजना अन्त समय तक भी स्थगित नहीं की गयी है, वरन यह योजना यीशु मसीह के प्रथम से ही सक्रिय है। रोमियों 11:12 और 15 में लिखा गया अब अर्थात वर्तमान काल को दर्षता है तब अर्थात भविष्य को नहीं। जैसा कि रोमियों 11:30-31 में

[3] अतः, यीशु मसीह का "प्रकाशितवाक्य" कही जाने वाली पुस्तक उसकी दूसरी आमद पर यहूदियों को यीशु के पास लेकर नहीं आयेगी वरन इस काल व आने वाले कालों में सुसमाचार का प्रचार यहूदियों में जलन को उत्पन्न करेगा और उन्हें यीशु मसीह के पास में खींच लाएगा (रोमियों 11:11,13-14)!

लिखा है कि मसीह पर विश्वास करने वाले गैर यहूदियों और मसीह पर विश्वास करने वाले मसीहियों के बीच वार्ता अभी अर्थात होगी।

जब यहूदियों के मन उनके पापों के द्वारा कठोर होने के कारण अन्यजातियों में बड़ा बदलाव आयेगा अर्थात वे मसीह पर विश्वास करने लगेंगे, तब इन यहूदियों में जलन पैदा होगी और ये भी यीशु मसीह पर विश्वास करने लगेंगें। यहेजकेल भविष्यद्वक्ता (यहेजकेल 36:25-27; 37:14), प्रभु यीशु मसीह (लूका 15:24, 32) और प्रेरित पौलुस (इफिसियों 2:1,5; 5:14) पापों के कारण अपने मनों को कठोर करने वाले यहूदियों में इस बदलाव को "मृतकों में से जी उठने" से कम नहीं बताते हैं (रोमियों 11:15)!

अतः गैर यहूदियों का उद्धार यहूदियों के विश्वास के बिना नहीं होगा (उनमें से कुछ भविष्यद्वाणियों को अर्थात यशायाह 49:22 और 66:18-19 प्रेरित पौलुस द्वारा नये नियम में लिखा गया है) और यहूदियों का उद्धार भी बिना गैर यहूदियों द्वारा विश्वास किये बगैर नहीं होगा (जिसे हम मिषन के सम्पूर्ण इतिहास में देख सकते हैं) (उदारहण के लिए यशायाह 66:20-21 और जिसकी वास्तविकता को हम रोमियों 11:31 और प्रकाशितवाक्य 3:9 में पाते है।)!

(3) रोमियों 11:16-24 में वर्णन किया गया है कि जड़ के साथ जुड़ना केवल विश्वास के द्वारा ही सम्भव है।

बाइबल के अनुच्छेद में पौलुस विशेष तौर पर गैर मसीहियों को सम्बोधित करता है (तुलना करें वचन 13), ताकि वे यहूदियों (परमेश्वर के निज लोगों) का उद्धार करने के प्रति परमेश्वर की योजना को गलत न समझें या उसे न भूलें (तुलना करें वचन 14)। परमेश्वर ने कुलपति अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ वाचा बांधी। उसने कहा कि मैं "तुम्हारा परमेश्वर" होऊंगा और तुम "सदा तक मेरे लोग ठहरोगे"। यहूदी राष्ट्र में कुछ लोगों के आंशिक तौर पर कठोर होने के कारण परमेश्वर ने इस्राएल के बाकि विश्वासियों (अर्थात कुलपतियों की वंशजों के साथ) के साथ अपनी वाचा को तोड़ नहीं दिया।

उसकी पूर्णता के पवित्र प्रतिनिधित्व का पहला फल (रोमियों 11:16)। अनुवादः यदि आटे की पहला पेड़ा पवित्र है, तो फिर पूरा गुथां हुआ आटा ही पवित्र है। यदि जड़ (ग्रीक: रीज़ा) पवित्र है तो फिर उसकी डालियां भी पवित्र हैं। दोनो ही तस्वीरें एक ही शिक्षा प्रदान करती हैंः अर्थात पवित्रता का प्रतिनिधित्व करने वाला हर एक पवित्र करता है। (तुलना करें। रोमियों 5:17-19 में यीशु मसीह पवित्रता का प्रतिनिधी है)

इस्राएल के लोग अनाज की पहली फसल का आटा गुंथकर, उसी आटे से वे रोटी बनाया करते थे और उसे वे परमेश्वर के सम्मुख उठाई हुई भेंट के रूप में चढ़ाया करते थे (गिनती 15:17-21)। इस तरह से वे अपनी सम्पूर्ण अनाज की फसल को परमेश्वर के लिए चढ़ा दिया करते थे। "पवित्र" का अर्थ "संसार के सामान्य इस्तेमाल से अलग करके परमेश्वर के कार्यों के लिए समर्पित करना"। ऐसा करने के द्वारा वे अपनी सम्पूर्ण फसल का परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया करते थे और वे मानते थे कि परमेश्वर ने उन्हें यह यषस्वी उपहार उन्हें अपने हाथों से दिया है।

उस जड़ के रूप में जो सम्पूर्ण वृक्ष को पवित्र ठहराती है (रोमियों 11:17-21)। जिस प्रकार से आदम सम्पूर्ण मानव वंशजों के प्राकृतिक मूल हैं उसी तरह से यीशु मसीह भी सभी आत्मिक वंशजों अर्थात विश्वासियों के मूल या प्रतिनिधी हैं (रोमियों 5:15-19)। ठीक इसी प्रकार से जड़ उससे जुड़ी हुई हर एक डाली को प्रगट करती है। वृक्ष की सभी डालियों में वृक्ष

का जीवन और उसकी पवित्रता निहित होती है (तुलना करें 1कुरिन्थियों 1:30)।

एक बाग में लगा हुआ जैतून का पेड़ अति उत्पादक होता है और यह परमेश्वर की वाचा के उन लोगों को दर्शाता है, जिनके द्वारा विश्वास करने वाले यहूदी केवल *शुरूआत* को रचा (यिर्मयाह 11:16-17) और विश्वास करने वाले गैर यहूदियों ने *विस्तार किया और चीजों को आगे बढ़ाया।* (रोमियों 11:24)। लेकिन *जंगली जैतून* सबसे बेकार *पेड़* है जो कि गैर यहूदी या अन्यजातिय देशों को प्रगट करता है। *एक घरेलू जैतून का वृक्ष* स्वाभाविक इस्राएल देश के रहने वाले बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास करने वाले हर एक विश्वासी को प्रगट करता है। लेकिन *जंगली जैतून की डालियां* गैर यहूदी देशों रहने वाले विश्वासियों को प्रगट करता है। जैतून की *जड़* विश्वास करने वाले कुलपतियों को दर्शाती है जिनके साथ में परमेश्वर ने वाचा बांधी थी (रोमियों 11:28) और अगर हम अन्तिम निचोड़ पर पहुंचें तो यह प्रभु यीशु मसीह को प्रगट करता है, जो स्वंय वाचा की "जड़" है (प्रकाशितवाक्य 22:16)।

- यीशु मसीह भेड़ों से मिलकर बने झुण्ड का एक मात्र चरवाहा है जिनमें से कुछ यहूदियों की भेड़शाला में से आयी है और कुछ अन्यजातियों में की भेड़शाला में से (यूहन्ना 10:16)
- यीशु मसीह की कलीसिया की एकमात्र बुनियाद है (1कुरिन्थियों 3:10-11; तुलना करें 1कुरिन्थियों 12:13)।
- यीशु मसीह (वाचा) का बीज है (गलातियों 3:16)
- यीशु मसीह वह मेल कराने वाला है जिसने उस दिवार को तोड़ दिया है जिससे यहूदी विश्वासियों और गैर- यहूदी विश्वासियों के बीच में मतभेद और बैर उत्पन्न होता है (अर्थात अनुष्ठानिक नियम), जो एक देह अर्थात कलीसिया में विश्वासियों के दो समूहों को उत्पन्न कर देते हैं। इफिसियों 2:11-22)
- यीशु मसीह (वाचा का जामिन) है। (इब्रानियों 7:22)
- यीशु मसीह (वाचा का) मध्यस्थ भी है (इब्रानियों 8:6)

यह जड़ न केवल विश्वास करने वाले यहूदियों को ही नहीं वरन, विश्वास करने वाले गैर यहूदियों को भी सम्भालती है।

जितनी भी शाखाएं इस पवित्र जड़ से जुड़ी हुई हैं वे सभी सच्चे विश्वासी हैं। उन सभी का संसार से अलग किया गया और परमेश्वर के लिए समर्पित किया गया है (1पतरस 2:9-10), चाहे वे घरेलू जैतून से आये हो या फिर जंगली जैतून के वृक्ष से। प्रत्येक गैर मसीही विश्वासी जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है *हमेशा हमेशा के लिए* उन यहूदी विश्वासियों के साथ "जुड़ जाते हैं" जो मसीह यीशु पर विश्वास करते हैं।[4] विश्वास के द्वारा "उन्हें जैतून की जड़ से लगातार पोषण मिलता रहता है"(रोमियों 11:17)।[5] विश्वास के द्वारा वे यीशु मसीह की देह अर्थात सिर के साथ जुड़ गये हैं और वे भी परमेश्वर की चुने हुए लोगों के

साथ बराबर के भागीदार हैं। लेकिन जो यहूदी और गैर यहूदी प्रभु यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं उन्हें प्रभु के द्वारा चुने जाने

[4] ग्रीक: egkentrizó en autois. "उनके स्थान में" नहीं (वैकल्पिक सिद्धान्त), वरन "उनके बीच में", इस तरह से उन्हें वह स्थान मिला है जिसकी तुलना हम जैतून के वृक्ष (परमेश्वर की वाचा के लोगों) और उसकी जड़ (यीशु मसीह) से की जा सकती है (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6)। The Greek -English Lexicon, page 215.

[5] इतिहासकार बताते हैं कि कलीसिया को यहूदी राष्ट्र इस्राएल के साथ जोड़ दिया गया है और यहूदी राष्ट्र वास्तव में परमेश्वर की निज प्रजा है। लेकिन रोमियों 11 स्पष्ट रूप में यह सिखाता है कि विश्वास करने वाली अन्यजातियां (गैर यहूदी) जिन्हें जैतून के वृक्ष में जोड़ा गया है वे उसकी जड़ के द्वारा पोषक तत्वों को भी पाते हैं। जैतून का वृक्ष यहूदी राष्ट्र इस्राएल को प्रगट नहीं करता है, वरन यह परमेश्वर के चुने हुए लोगों की तस्वीर है जिसमें यहूदी और गैर यहूदी दोनों ही प्रकार के लोग शामिल हैं। और जड़ कुलपति याकूब को नहीं वरन प्रभु यीशु का प्रकट करती है, जो कि विश्वास करने वाले यहूदी और यूनानी दोनों का ही प्रभु है। इस तरह से नये नियम की कलीसिया को यहूदी राष्ट्र में नहीं वरन मसीह अर्थात यीशु मसीह में जोड़ा गया है। यहूदी और गैर यहूदी विश्वासी दोनों ही एक ही आत्मा में होकर (अर्थात मसीह की आत्मा में) एक देह में (अर्थात मसीह की देह में) बपतिस्मा लेते हैं। (1कुरिन्थियों 12:13)! इसलिए कभी भी इस बात को न भूलें कि सच्चे इस्राएली यहूदी लोग नहीं हैं, वरन वह "परमेश्वर के दास" अर्थात प्रभु यीशु मसीह हैं। (यशायाह 49:3,6)! जितने भी लोग यीशु मसीह के क्रूस पर गर्व करते हैं वे सभी नयी सृष्टि हैं, वे सभी "परमेश्वर के लिए इस्राएल हैं"। (इसके विपरीत गलातियों 6:14-16 में अविश्वासी यहूदी हैं जिन्हें "देह के अनुसार इस्राएल कहा गया है") (ग्रीक: इस्राएल काटा सार्का) (1कुरिन्थियों 10:18)।

वाले लोगों से अलग फेंक दिया गया है (मत्ती 8:11-12; 21:42 तथा यूहन्ना 15:6)।

यीशु मसीह में विश्वास करने वाले यहूदी और गैर यहूदी पूरी तरह से एक समान रूप में जड़ अर्थात, यीशु मसीह से जुड़ गये हैं, "यहूदियों और गैर यहूदियों में कोई अन्तर नहीं है।" (रोमियों 10:12-13; गलातियों 3:28; इफिसियों 2:14-18; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:11-12)। विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर यहूदियों ने एक ही आत्मा से मसीह की देह (कलीसिया) में बपतिस्मा प्राप्त किया है। (तुलना करें 1कुरिन्थियों 12:12-13; इफिसियों 1:13; 2:11-22; 3:2-6)।

पुराने नियम के समय में परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा में पहले तो इस्राएल देश के रहने वाले यहूदी विश्वासी और कुछ गैर यहूदी विश्वासी शामिल थे (यशायाह 56:3-8)। लेकिन नये नियम के समय में परमेश्वर के चुने हुए लोगों में संसार भर के देशों में रहने वाले लोग आते हैं, जिनमें कुछ यहूदी लोग भी शामिल हैं। (रोमियों 1:16; गलातियों 3:26-29; 1पतरस 2:9-10)। नये नियम में परमेश्वर के चुने हुए लोगों को "परमेश्वर का राज्य" या "मसीह की देह" के नाम से जाना जाता है (जो कि एक सार्वभौमिक कलीसिया है)।

परमेश्वर की कठोरता और परमेश्वर की कृपा (रोमियों 11:22-24)। जितने यहूदी स्वाभाविक तौर पर इस्राएल देश के वासी हैं, लेकिन वे वाचा की मांग को पूरा नहीं करते अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते, वे न तो वर्तमान काल में उद्धार पाएंगे और न हीं भविष्य में अर्थात अन्त के दिनों में उद्धार पाएंगे! यही परमेश्वर की कठोरता है। लेकिन जो यहूदी अपने अविश्वास से फिर जाते हैं वे हमेशा के लिए बच जाएगें। यह परमेश्वर की कृपा है। इस्राएलियों के प्रति परमेश्वर की कठोरता और कृपा (तुलना करें यिर्मयाह 18:5-12) संसार भर के गैर यहूदी राष्ट्रों में रहने वाले विश्वासियों के प्रति दिखाई जाने वाली कठोरता और कृपा के समा नही है। (यूहन्ना 3:16-18,36)।

गैर यहूदी लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर की निज प्रजा कहलाने वाले लोगों का प्रारम्भ इस्राएलियों में वास करने वाले विश्वासियों के साथ ही हुआ था (रोमियों 1:16; तुलना करें मत्ती 10:5-6)। लेकिन यीशु मसीह के प्रथम आगमन के बाद से उसने अपनी वाचा शामिल किये जाने वाले लोगों का दायरा बढ़ाकर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले संसार के सारे देशों के लोगों तक कर दिया। (तुलना करें मत्ती 28:19)।

वह दृढ़ सिद्धान्त जिसके द्वारा लोग परमेश्वर के राज्य में भागीदार बनते हैं, वह प्रभु यीशु पर विश्वास करना है।[6] केवल प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही यहूदी और गैर यहूदी लोग परमेश्वर की निज प्रजा, कुलपतियों तथा वाचा की आशीषों का हिस्सा हो पाते हैं (गलातियों 3:26-29; इब्रानियों 11:6)।

अतः, "यहूदियों और यूनानियों में कोई अन्तर नहीं है।"....जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" (रोमियों 10:12.13)!

11:25-32

खोज 2. **परमेश्वर के उद्धार की योजना में चुने हुए गैर यहूदियों की तथा चुने हुए यहूदियों की संख्या एक ही साथ**

[6] इब्रानियों 11:6-8, 21-27। गैर यहूदियों (नूह और अब्राहम) और यहूदियों ने (याकूब, यूसुफ और मूसा) यीशु मसीह पर विश्वास करने के कारण ही उद्धार पाया था। यहूदियों ने यीशु मसीह के दूसरे आगमन उसके प्रकाशन के कारण उद्धार नहीं पाया है। इब्रानियों की पत्री विशेष तौर पर यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदियों के लिए लिखी गयी है।

पूरी होगी।

रोमियों 11:25.32 में "अन्याजियों के गिनती के पूरे होने" और "इस्राएल के लोगों की गिनती के पूरे होने" के बीच सम्बन्ध को प्रगट किया गया है। "भेद" का अर्थ उन बातों से हैं जो पुराने नियम के समय में गुप्त रखी गयी थीं, लेकिन उन्ही बातों को नये नियम में खोल कर बता दिया गया है। वह भेद यह है कि यहूदियों और गैर यहूदियों *दोनों* ही परमेश्वर के वारिस हैं, और

यहूदियों और गैर यहूदियों का उद्धार *आपस में एक दूसरे पर निर्भर* है, तथा अन्यजातियों में से चुने हुए विश्वासियों की संख्या और यहूदियों में से चुने हुए विश्वासियों की संख्या यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर *एक ही साथ* पूरी होगी।

(1) भेद की बात यह है कि गैर यहूदी विश्वासी भी यहूदी विश्वासियों के समान ही वारिस हैं।

जिस भेद की बात पौलुस 25 वें वचन में कर रहा है वह नये नियम में परमेश्वर की योजना को प्रगट करता है। उद्धार की इस योजना में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच नये रिश्ते के बारे में बताया गया है।

रोमियों 11:25 में दर्शाया गया यह भेद इफिसियों 3:2-6 में लिखे भेद से सम्बन्ध रखता है। जिन बातों को पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता नहीं जानते थे, उन बातों को नये नियम के प्रेरितों पर प्रगट कर दिया गया। परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया कि उद्धार की इस योजना में न केवल विश्वासियों को वरन, गैर यहूदी विश्वासियों को भी शामिल किया गया है (देखें प्रेरितों के काम 10:24-25)। गैर यहूदी विश्वासी और यहूदी विश्वासी एक साथ मिलकरः।

- "एक ही चरवाहे के भेड़ें होगें" अर्थात यीशु के (यूहन्ना 10:16)
- मसीह की एक ही देह के सदस्य होंगे" (1कुरिन्थियों 12:13)
- "परमेश्वर का मन्दिर होंगे" (2कुरिन्थियों 6:16)
- "परमेश्वर के चुने हुओं के वारिस होंगे" (गलातियों 3:27-29)
- "परमेश्वर के इस्राएल होंगे" (गलातियों 6:14-16)
- यीशु मसीह में "एक नयी सृष्टि" होंगे (इफिसियों 2:14-18)
- "बाइबल में लिखी प्रतिज्ञाओं के भागिदार होंगे" (इफिसियों 3:2-6; तुलना करें. 2कुरिन्थियों 1:20)
- "परमेश्वर के लोग" होंगे (1पतरस 2:9-10)।

डोटा 11 के अध्याय 34 में रोमियों 9:4-9 में दिये गये प्रश्न में "पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के इस्तेमाल किये गये सम्बोधन और नये नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए इस्तेमाल किये गये सम्बोधन की तुलना" को देखें।

(1) यह भेद यहूदियों और गैर यहूदियों के उद्धार के लिए आपसी निर्भरता है।

रोमियों 11:11-15 इस ईश्वरीय भेद के सार पर ज़ोर डालती है, विशेषतौर पर "यहूदियों और गैर यहूदियों के उद्धार के निमित्त आपस में एक दूसरे पर निर्भर होने पर"। यह घटनाओं की ऐसी श्रृंखला का हवाला देते हैं जिनके परिणाम स्वरूप यहूदियों और यूनानियों का उद्धार हुआ था। रोमियों 11:26 में "सच्चे इस्राएलियों" में यीशु मसीह में विश्वास करने वाले ऐसे विश्वासी शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर द्वारा अस्विकृत नहीं किया गया है।

(2) भेद की बात यह है कि अन्यजातियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती और यहूदियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती साथ-साथ पूरी होगी।

रोमियों 11:25-26 में पौलुस ज़ोर देते हुए बताता है कि भेद यह है कि विश्वास करने वाले अन्यजातियों की गिनती और विश्वास करने वाले इस्राएली यहूदियों की गिनती एक साथ इतिहास के अन्त में अर्थात यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी होगी। "परमेश्वर ने हमारे लिए (अर्थात नये नियम के विश्वासियों के लिए) कुछ उत्तम बातों को चुन रखा है, कि वे (अर्थात पुराने नियम के विश्वासी) (इब्रानियों 11:40)

"सारे इस्राएली" (रोमियों 11:26) या "इस्राएलियों की परिपूर्णता को" (रोमियों 11:12) "अन्यजातियों की परिपूर्णता" का इन्तज़ार करना होगा (रोमियों 11:25), इससे पहले कि इस्राएल (विश्वास करने वाले यहूदियों का देश) एक बार फिर से परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में प्रगट होगा (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 21:3, "वे उसके लोग ठहरेगें" - बहुवचन)। इस समय पर इस्राएल की तस्वीर (यहूदी राष्ट्र) की तस्वीर धुंधली है, क्योंकि इस्राएल बंटा हुआ है (विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच में) और ऐसा प्रतीत होता है कि उसे अस्विकार किया गया है। पौलुस कहता है कि इस्राएल की यह तस्वीर (यहूदी लोगों के रूप में) "आंशिक" और "अस्थायी" दोनो है।

जब"अन्यजातियां परिपूर्ण हो जाएंगी" (अन्यजातियों में से चुने हुए विश्वासियों की गिनती) पूरी हो जाएगी, "तब इस्राएल की परिपूर्णता" भी (यहूदियों में से चुने हुए विश्वासियों की गिनती) प्रगट कर दी जाएगी। भेद की बात यह है कि इस्राएल के लोग (यहूदी लोग) अन्त समय तक *आंशिक तौर पर कठोर* बने रहेगें। केवल अन्त के समय में जाकर परमेश्वर की निज प्रजा के रूप में इस्राएली लोग (अर्थात वे यहूदी जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं) जिनमें इस्राएल देश में से विश्वास करने वाले लोगों की पूर्ण गिनती शामिल होगी (रोमियों 9:6), पूरी तरह से प्रगट की जाएगी। यह अन्यजातियों में से विश्वासियों की गिनती के पूरा होने के साथ होगा, जिनमें गैर यहूदी राष्ट्रों में से चुने गये विश्वासी शामिल होगें।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 1:1-17 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

11:26

प्रश्न 1. "सारे इस्राएली" का अर्थ क्या है?

ध्यान दें।

(1) रोमियों 11:25 और रोमियों 11:26 के बीच में सम्बन्ध।

"इस्राएलियों का उद्धार" कोई "भेद" नहीं है वरन यह तो उस "भेद" का परिणाम है। भेद प्रगट करता है कि इस्राएल के स्वाभाविक लोगों अर्थात यहूदियों का आंशिक रूप में अस्विकार किया जाना और अन्यजातियों में से विश्वासियों के उद्धार प्राप्त करने की गिनती की परिपूर्णता वह तरीका वह आपसी निर्भरता है जिसके द्वारा "सारे इस्राएलियों" का उद्धार (ग्रीकः पास

इस्राएल) या इस्राएल की "परिपूर्णता" (ग्रीकः प्लीरोमा") (रोमियों 11:12) अपना अस्तित्व में आयेगी।
यह दृष्टिकोण या नज़रिया कि यह "भेद" है कि *सारे इस्राएलियों का (स्वाभाविक) उद्धार होगा,* गलत है।

(2) "सारे इस्राएली" अभिव्यक्ति इस बात को नहीं दर्शाती है कि
सदियों से इस्राएल के अन्दर जितने भी लोग स्वाभाविक तौर पर पैदा हुए हैं वे सभी इस्राएली है।
यह(गलत) धारणा मानती है कि "सारे" (ग्रीकःपास) का अर्थ हमेशा सारे लोग होता है अर्थात उसमें कोई नहीं छूटता। इसलिए वे सिखाते हैं कि *जितने भी यहूदी आज तक इस धरती पर जन्में हैं उनका उद्धार तो तय है।* यह दृष्टिकोण रोमियों 5:17-19 में लिखी बातों से मेल नहीं खाता है जिसमें लिखा गया है कि शब्द "पास" केवल उन लोगों के बारे में बात करता है "जो लोग अपने प्रतिनिधी से जुड़े हैं" न कि "जिनते लोगों ने इस धरती पर जन्म लिया है! परमेश्वर अविश्वासी यहूदियों के बारे में कहते हैं कि," तुम मेरे लोग नहीं हो (इब्रानियोंः लो अम्मी) और न ही मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं" (होशे 1:9)!

नये नियम और पुराने नियम में परमेश्वर ने अविश्वासी और अनाज्ञाकारी यहूदियों (और गैर यहूदियों) को अस्विकार किया है (दानिय्येल 12:2; मत्ती 8:12; इब्रानियों 4:2, 6)। एक जन (यहूदी) केवल तब ही (बना रहता है) (निश्चित काल) यीशु मसीह या पवित्र आत्मा का "भागीदार" (ग्रीक: metochos) (इब्रानियों 3:14) (इब्रानियों 6:4) बनता है "यदि" (ग्रीक: katechó) (आत्मपरक, अनिर्दिष्ट काल) उसके बोध (आत्म विश्वास या निश्चय) (ग्रीक: arché tés hupostaseós) अन्त तक दृढ़ बना रहे (इब्रानियों 3:14)। एक मानवीय दृष्टिकोण से देखें तो, एक विश्वासी की दृढ़ता उसकी प्रबल विश्वासयोग्यता से प्रगट होती है। अविश्वासी लोग हमेशा के लिए भटक चुके हैं (यूहन्ना 3:16)। रोमियों 9:27 में पौलुस निश्चित तौर पर सार्वभौमिक उद्धार की बात नहीं करता हैः "चाहे इस्राएलियों की गिनती बालू के किनकों के समान ही क्यों न हो लेकिन केवल छुड़ाये गये लोग ही उद्धार पाएंगे।"

(3) यह सोच कि "सारे इस्राएल" का अर्थ आज तक जन्मे हुए सारे यहूदी हैं, बिल्कुल गलत है।
अन्त समय में "सारे इस्राएल" की अभिव्यक्ति केवल इस्राएल के लोगों तक ही सीमित नहीं है।
यह सोच (गलत) यह सोचती है कि *"आंशिक कठोरता"* यहूदी राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण इस्राएल पर यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर यीशु मसीह के पुनःआगमन से कुछ समय पहले तक आ पड़ी है (अर्थात छठे काल का सबसे बड़ा हिस्सा, जिसे कलीसियाई काल भी कहा जाता है)। आंशिक रूप से कठोर होने का यह काल "अन्तराल" या "अन्तरिम काल" कहलाता है जिसे दानिय्येल 9:24-27 में 69वां और 70वां सप्ताह कहते हैं। लेकिन आप दानिय्येल की पुस्तक की व्याख्या www.deltacourse.org Delta Plus study 15 में देखें। केवल महान क्लेश (जिसे दानिय्येल का 70वां हफ्ता भी कहा जाता है) के प्रारम्भ होने से पहले या मध्य में होने वाले मसीह की "कलीसिया के रैप्चर" (ग्रीक: parousia)[7] जो कि मसीह के "प्रकाशन" से पहले होगा, परमेश्वर इस्राएल के उद्धार अर्थात "सम्पूर्ण यहूदी राष्ट्र का उद्धार" के उस उद्धार के काम को जिसमें उसने थोड़ा विलम्ब कर दिया था फिर से प्रारम्भ कर देगा (ग्रीक: pas Israel)।

यह दृष्टिकोण इस बारे में कोई बात नहीं करता कि पुराने नियम में भी बहुत से यहूदियों ने पहले ही विश्वास कर लिया थाः अर्थात अब्राहम के अलावा, कई इब्रियों (उत्पत्ति 14:13; 15:6), अरामियों (यहेजकेल 16:3,45), पुराने नियम के समय में

[7] मत्ती 24:29-31 में शब्द "पारोउसिया" और लूका 17:30-35 में "अपोकालुपिस" स्पष्ट तौर पर बताते हैं कि दूसरा आगमन दो बार नहीं (एक कलसिया को ले जाने के लिए और एक कलीसिया के साथ में)(जिनके बीच का अन्तराल 3) या 7 वर्ष) का होगा, वरन एक ही दूसरा आगमन होगा। बाइबल के दोनों अनुच्छेद बताते हैं कि मसीहियों को महाक्लेश से होकर गुज़रना ही पड़ेगा।

यहूदियों कमें से पाये जाने वाले विश्वास के वीरों ने (इब्रानियों 11:1-40), मूसा के समय में मन फिराने वाले यहूदियों ने (व्यवस्थाविवरण 31:2,6), एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के समय में 7000 लोगों ने जिन्होंने बाल के सामने कभी घुटने नहीं टेके थे (1राजा 19:18) और यशायाह नबी के समय में छुड़ाये गये लोगों ने (यशायाह1:9; 28:16)।

यह विचार धारा इस बात का भी उल्लेख नहीं करती है कि यीशु मसीह और प्रेरितों के समय में भी बहुत से यहूदियों ने विश्वास किया थाः उदाहरण के लिए, प्रभु यीशु मसीह के चेले (प्रेरितों. 1:15), पिन्तेकुस्त के दिन विश्वास करने वाले 3000 लोग (प्रेरितों 2:41), 5000 वे लोग जिन्होंने संदेश के बाद विश्वास किया (प्रेरितों 4:4), वे यहूदी जो रोज "कलीसिया में जुड़ रहे थे" (प्रेरितों 2:47; 6:7), हज़ारों वे लोग जिन्होंने यरूशलेम पर विश्वास किया (प्रेरितों 21:20) और वर्तमान समय में विश्वास करने वाले लोग (57 ई.पू. जब पौलुस ने रोमियों को अपनी पत्री लिखी रोमियों) "ऐसे लोगों का समूह जिन्हें परमेश्वर द्वारा चुना गया" (रोमियों 11:5), गलातियों में (गलातियों 3:28), कुरिन्थियों में (1कुरिन्थियों 12:13), रोम में (रोमियों 1:16), इफिसुस में (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6), कुलुस्से में (कुलुस्सियों 3:11), तथा अन्य लोगों ने (प्रकाशितवाक्य 1:12-13)। यह सोच कि "सारे इस्राएल" का अर्थ *अन्त समय में यहूदी राष्ट्र* को दर्शाता है गलत है।

(4) "सम्पूर्ण इस्राएल" अभिव्यक्ति इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को नहीं दर्शाती है, इसका अर्थ है कि पौलुस कोई यहूदी वादी वाक्य नहीं बोलता है।

रोमियों 9:6 में हमें बताया गया है कि "जो सारे लोग इस्राएल के वंश है, वे सब इस्राएली नहीं हैं।" पूरे अध्याय 9 में पौलुस इस्राएल राष्ट्र को सर्वोच्च स्थान या प्राथमिकता देने वाली तस्वीर का विरोध करता है। यहूदी माता पिता द्वारा या यहूदी वंश में पैदा होने के कारण सभी लोग "यहूदी" या "परमेश्वर की सन्तान" नहीं हैं। यहूदी (गैर यहूदी) केवल नये जन्म (रोमियों 2:28-29), परमेश्वर की श्रेष्ठ प्रतिज्ञा, चुनाव, बुलाहट, प्रेम और दया (रोमियों 9:6-18) के द्वारा "परमेश्वर की सन्तान" या "इस्राएल के सच्चे नागरिक बनते हैं। यीशु मसीह ने यहूदियों से कहा, "जब तक तुम नये सिरे से जन्म न लो, तुम परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकते हो," और उसमें "प्रवेश नहीं कर सकते हो।" (यूहन्ना 3:3,5)। यीशु द्वारा यह कहे जाने पर कि, "तुम्हें नया जन्म लेना अवश्य है" यहूदियों को अचम्भित नहीं होना चाहिए था। (यूहन्ना 3:8)।

यह सोच कि "सारा इस्राएली" *उन प्राकृतिक यहूदियों को दर्शाता है जो आज तक धरती पर पैदा हुए हैं*, गलत है।

(5) "सारा इस्राएल" अभिव्यक्ति उद्धार के इतिहास में यहूदियों में से चुने हुए यहूदियों की "पूरी गिनती" या "परिपूर्णता" को दर्शाती है।"

यह उन यहूदियों की ओर ईशारा नहीं करती है जो अन्त के समय में परमेश्वर की धार्मिकता की उस मांग को किसी न किसी तरीके से "पूरा" करेगें, जो बीते समय में (रोमियों 11:11-16) उनके "अपराधों" (ग्रीकः पराप्तोमा) (अविश्वास) और "पराजय" (असफलता) (ग्रीक: हेटेमा) के विपरीत है।

यह यहूदियों को "उस संख्या को दर्शाते हैं" जिनका उद्धार होगा। यह संख्या हर काल में छुड़ाए गये यहूदियों की संख्या को जोड़ने के द्वारा प्राप्त होती है, उदाहरण के लिए:

- एलिय्याह के समय में "छुड़ाएं गये लोग" (1राजाओं 19:18)
- यशायाह के समय में "छुड़ाएं गये लोग" (यशायाह 1:9; 2:4; रोमियों 9:27)
- यीशु मसीह के समय में चेलों का "छोटा झुण्ड" (लूका12:32)

- निश्चय तौर पर उनमें "बहुत से इस्राएली होगें" (लूका 2:34; तुलना करें. प्रेरितों. 2:41,47; 4:4; 6:7; 9:31)
- पौलुस के समय में "छुड़ाएं गये लोग" (रोमियों 11:5)
- और आने वाले कालों में अर्थात यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक (मत्ती 10:23) "बचाये जाने वाले लोग"।

पौलुस को इस बात की कोई परवाह नहीं है कि कितने अधिक यहूदियों को उद्धार होगा, परन्तु उसे इस बात की अधिक खुशी है कि हर काल में परमेश्वर की वाचा से जुड़े हुए लोगों में हमेशा यहूदी भी शामिल होगें। लेकिन प्रकाशितवाक्य 7:9 बताता है, " एक बड़ी भीड़ के बारे में जिसमें हर जाति, हर भाषा, गोत्र और वर्ग के लोग शामिल होगें, जिनकी गिनती कोई नहीं कर सकता और इसे यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले यहूदी भी शामिल होगें।

11:26

***प्रश्न 2.* "सारे इस्राएलियों" का उद्धार कब होगा?**[8]

ध्यान दें।

(1) रोमियों 11:23 कोई भविष्यसूचक कथन नहीं है कि सारे (प्राकृतिक) यहूदी उद्धार पाएंगे।

रोमियों 11:11-12 में पौलुस अन्त के समय में इस्राएल में पैदा हुए सभी यहूदियों के उद्धार की बात नहीं कर रहा है, लेकिन वह अन्त समय तक उद्धार के इतिहास में चुने हुए यदूहियों के उद्धार की बात कर रहा है।

रोमियों 11:11,14 में लिखा है कि वर्तमान काल में पाये जाने वाले इस्राएल में रहने वाले यहूदियों में (अर्थात मसीह के पहले आगमन से लेकर अब तक) जलन उत्पन्न कराई जानी चाहिए, ताकि चुने हुए यहूदियों में से बचे गये लोगों का अब (अर्थात यीशु के प्रथम आगमन के बाद से) उद्धार हो जाए। प्रेरित पौलुस वास्तव में यही काम गैर यहूदियों के बीच में कर रहा था (रोमियों 11:20-31)

अतः, जो चीज "सम्पूर्ण इस्राएल" को मसीह के दूसरे आगमन पर प्राप्त होगी, वही चीज अर्थात उद्धार युगों से गैर यहूदियों (अन्यजातियों) और विश्वासी यहूदियों को सुसमाचार प्रचार किये जाने के द्वारा प्राप्त हो रही है।" सुसमाचार हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है (रोमियों 1:16)। इस संसार में रहते हुए यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को अपनी सेवकाई के *प्रारम्भ में* दी जाने वाली आज्ञा को देखेंः पहले तो यहूदियों के लिए (मत्ती 10:5-6) और बाद में उसने प्रेरितों को अपनी सेवाकाई के *अन्त में* एक आज्ञा दी: अन्यजातियों के लिए (मत्ती 28:19)!

क्योंकि पुराने नियम के समय से लेकर यीशु मसीह के प्रथम आगमन तक बहुत से यहूदियों का "त्याग दिया जाना" (ग्रीक: apobolé) जगत में रहने वाली अन्यजातियों के "मिलाप" (ग्रीक: katallagé) का कारण हुआ, तो यीशु मसीह के दूसरे

---

[8] रोमियों 11:25-26 का अनुवाद, *"एक आंशिक कठोरता* (ग्रीक: pórósis apo merous) इस्राएल पर तब तक आ पड़ी है (ग्रीक: ginomai) (निश्चित काल) जब तक कि अन्यजातियों की ठहराई हुई गिनती पूरी नहीं हो जाती, और इस तरह से (ग्रीक: kai houtós) सारे इस्राएलियों को उद्धार हो जाएगा, यह बिल्कुल सत्य हैः मूल ग्रीक लेख, इंगलिश अनुवाद (KJV, NASB, NIV), डच अनुवाद (SV,BBG, KBS, HSV), दक्षिण अफ्रिका को अनुवाद (NAV), डैनिश और अन्य अनुवाद (ग्रीक: Lexicon of Bauer, Arndt en Gingrich.)

लेकिन यह अनुवाद कि, *"एक अस्थाई कठोरता इस्राएल पर आ गयी है,* जिससे की अन्यजातियों की गिनती पूरी हो जाएगी, और तब सारे इस्राएलियों को उद्धार हो जाएगा, ठीक नहीं है। यह अनुवाद युगवाद से लिया गया है और यह अनुवाद कुछ अमेरिकन बाइबलों में पाया जाता है (लिविंग बाइबल और गुड न्यूज़ फॉर मॉर्डन मैन)।

आगमन तक बहुत से यहूदियों में सुसमाचार प्रचार के माध्यम से "ग्रहण किया जाना" (ग्रीक: proslémpsis) "मृतकों में से जीवित होने के बराबर" (ग्रीक: zóé ek nekrón) क्यों न ठहरेगा। यह वचन बहुत से ऐसे यहूदियों के लिए है जो आत्मिक तौर पर मृतक हैं लेकिन वे अनन्त जीवन प्राप्त करेगें। यहेजकेल नबी (यहेजकेल 36:25-27; 37:14), प्रभु यीशु मसीह (लूका 15:24,32) और प्रेरित पौलुस (इफिसियों 2:1,5; 5:14) यहूदियों की कठोरता में इस रूपान्तरण को "मृतकों में से जीवन उठने" के बराबर बताते है (रोमियों 11:15)!

यह हवाला "संसार में अब तक जन्म यहूदियों के रूपान्तरण के लिए" नहीं हो सकता और न ही हम इसे " मिलेनियल किंगडम अर्थात सहस्राब्दिक राज्य" से जोड़कर नहीं देख सकते, जिसमें यहूदियों को अगुवाई प्राप्त होगी, यहूदी मिश्नरी ही बहुत से गैर यहूदी लोगों को मसीह पर विश्वास करने में अगुवाई करेगें, और उन्हीं के द्वारा धरती पर सम्भवतः सबसे बड़ी आशीष आयेगी।", क्योंकि यदि हम युगों के आधार पर देखें, यह घटना (इस्राएल की परिपूर्णता) "अन्यजातियों की गिनती की पूर्ति" के बाद ही घटेगी और तब उसके बाद अन्यजातियों में से कोई भी जन विश्सास में नहीं आयेगा।

रोमियों 11:23 कहता है, "वे भी यदि अविश्वास में न रहेए तो साँटे जाएँगे" क्योंकि परमेश्वर उन्हे फिर साट सकता है (जो यहूदी हैं)" यह वचन कोई भविष्यसूचक वाक्य नहीं है कि "अन्त के समय में इस्राएल का सम्पूर्ण प्राकृतिक राष्ट्र" लगातार अविश्वास नहीं करेगा!

पौलुस यहां पर जो कहने की कोशिश करता है वह यह है कि यहूदी और गैर यहूदी सभी लोग यीशु मसीह विश्वास करने की व्यक्तिगत मांग को पूरा कर देगें तो यीशु मसीह में कलम लगा दिये जाएगें। इस तरह से यहूदी और गैर यहूदी जैतून के पेड़ में सांटे जाकर एक परमेश्वर के लोग बन (यूहन्ना 10:16द्ध या कलीसिया बन रहे हैं(1 कुरिन्थियों 12:13द्ध। यह सिद्धान्त कि, लोग सुसमाचार सुनने के बाद विश्वास के द्वारा ही उद्धार पाते हैं सभी कालों में सत्य है। इसे रोमियों 10:14-17 और इफिसियों 1:13 में स्पष्ट तौर पर बताया गया है। पौलुस को वर्तमान काल में सुसमाचार प्रचार किये जाने और यहूदियों द्वारा उसको विश्वास के साथ प्रतिउत्तर देने के अलावा कोई ऐसा तरीका दिखाई नहीं देता जिसके द्वारा यूहदियों को उद्धार हो सकता है।

(2) रोमियों 11:26 का अर्थ यह नहीं है कि इस्राएल "अस्थाई रूप में कठोर किया जाएगा और फिर सारे इस्राएल का उद्धार हो जाएगा।"

25 व 26 पद में पौलुस यह नहीं कह रहा है कि "अन्यजातियों के उद्धार पाने तक इस्राएल का एक भाग *अस्थाई* तौर पर कठोर बना रहेगा *और फिर* सारे इस्राएल का उद्धार हो जाएगा। पौलुस इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचता है कि अन्यजातियों के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के बाद, *एक अन्तरिम काल* होगा (उदाहरण के लिए, "महाक्लेश का समय") जिसमें यहूदी राष्ट्र का उद्धार हो जाएगा। बाइबल में कहीं पर भी यह नहीं बताया गया है कि अन्यजातियों के प्रवेश करने और संसार के अन्त के बीच में ऐसा कोई अन्तरिम काल होगा। इसके अलावा यह भी कहीं नहीं लिखा हुआ है कि सम्पूर्ण यहूदी राष्ट्र यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर विश्वास में आ जाएगा। यहूदियों को अन्यजातियों को वह नियम अन्त समय एक साथ आ जाएगा। (मत्ती 13:37-43; 24:21-31; 25:31-33; 2पतरस 3:7-13; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)!

(3) रोमियों 11:26 का अर्थ है "इस्राएल का आंशिक रूप में कठोर होना और (इस तरह से) सारे इस्राएल का उद्धार होना।

पद 25 के मूल लेख का अनुवाद केवल यह किया सकता है कि इस्राएल को "आंशिक रूप से" कठोर किया गया है (और

आज भी कठोर है।) (ग्रीक: tó Israel gegonen) (सिद्ध काल)। यह सिद्ध काल इस बात को प्रगट करता है कि यीशु के दूसरे आगमन तक यहूदियों का हृदय इस क्षेत्र में कठोर बना रहेगा।

पद 26 के दिये गये शब्दों का अर्थ केवल यह निकाला जा सकता है कि "अतः,(इस तरह से" (ग्रीक: kai houtós) "और उसके बाद नहीं"। क्योंकि यहूदियों ने मसीह के प्रति अपने मन को कठोर कर लिया था, इसलिए मसीह गैर यहूदियों (अन्यजातियों) के पास गया (उदारहण के लिए, प्रेरितों 13:45-51); और गैर यहूदियों के विश्वास में आने के कारण, यहूदियों में जलन उत्पन्न हो गयी और *इस तरीके से* उनमें से बहुत लोग मसीह पर विश्वास करने लगे।

इस्राएलियों का मन उस समय अन्तराल में आंशिक रूप से (स्थायी तौर पर नहीं) कठोर रहता है जिस समय में बहुत से गैर-यहूदी (इसका अर्थ है कि सारे गैर यहूदी नहीं) लोग विश्वास करके परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। इसी समय में यहूदियों में से एक भाग (बचे हुए लोग) ऐसा रहेगा जिन्होने अपने मन को कठोर नहीं किया और वे परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं! पौलुस उस क्षण या समय की बात नहीं करता जिस में यहूदियां को उद्धार होता है, परन्तु वे उस तरीके की बात करते हैं जिससे यहूदियों को उद्धार प्राप्त हो रहा है। यहूदी आज भी उद्धार पर रहे हैं(अर्थात, मसीह के प्रथम आगमन से लेकर) यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक उद्धार पाते रहेगें।

वह यह कहता है कि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र की आंशिक कठोरता और अन्यजातियों में से विश्वास करने वालों की संख्या के बीच पारस्परिक निर्भरता वह तरीका या उपाय है जिसके द्वारा परमेश्वर इस्राएल में से विश्वास करने वालों की नियत संख्या को पूरा करेगा! जिस क्षण यहूदियों में से विश्वास करने वालों की यह संख्या पूरी हो जाएगी उसी क्षण अपने आप अन्यजातियों में से उद्धार पाने वाले विश्वासियों की संख्या भी पूरी हो जाएगी। यह घटना आगे पीछे नहीं घटेगी।

मसीह के प्रथम आगमन और उसके दूसरे आगमन के बीच में उद्धार का इतिहास यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए समान है। यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए उद्धार का मार्ग बिल्कुल एक समान है। (रोमियों 10:12-13)। पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा बांधी गयी वाचा में पहले से ही गैर यहूदियों को शामिल किया गया था (उत्प.12:3; देखें यशायाह 56:3-8)। लेकिन परमेश्वर की वाचा यहूदियों और गैर यहूदियों दोनों से ही विश्वास की मांग करती है (रोमियों 1:16; 11:23)। बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि सभी कालों में अगर यहूदियों और गैर यहूदियों में से कोई भी जन विश्वास नहीं करेगा, तो उनका उद्धार नहीं होगा (रोमियों 2:9य मत्ती 8:11.12य 21:42.44)। और बाइबल स्पष्ट तौर पर यह भी शिक्षा देती है कि सभी युगों व कालों में चाहे यहूदियों में से हों या गैर यहूदियों में से यदि कोई भी जन यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे मिलकर *एक जीव* का निर्माण करते हैं, जिन्हें कई रूपकों से दर्शाया गया है:।

- मसीह का एक झुण्ड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर का एक परिवार (गलातियों 3:26-29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का घराना, परमेश्वर की आत्मा का वास स्थान (इफिसियों 2:11-22)
- मसीह की एक देह (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 3:6)
- एक जैतून का पेड़ (यिर्मयाह 11:16-17; रोमियों 11:17-24)
- परमेश्वर द्वारा चुने हुए और पवित्र लोग (1 पतरस 2:9-10).
- एक नया यरूशलेम, मसीह की दुल्हन (प्रकाशितवाक्य 21:9-14, तुलना करें इब्रानियों 12:22-24 यहूदियों के लिए, गलातियों 4:21-31 गैर यहूदियों के लिए)

यहूदियों और गैर यहूदियों का उद्धार आंशिक तौर पर मसीह की दूसरी आमद तक जगत के इतिहास के कालों में चलता रहेगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर ही यहूदियों में से उद्धार पाने वालो की गिनती और अन्यजातियों में से विश्वास करने वालों की गिनती साथ साथ पूरी हो जाएगी।

इसके अलावा यहूदियों और गैर यहूदियों के लिए उद्धार पाने का अवसर भी यीशु मसीह के दूसरे आगमन के साथ समाप्त हो जाएगा। मसीह के दूसरे आगमन पर किसी को भी विश्वास करने का या उसे स्वीकार करने का अवसर नहीं प्राप्त होगा, क्योंकि उसके दूसरे आगमन पर दरवाजा बन्द हो जाएगा, और उसके बाद कोई भी जन परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा (मत्ती 25:10-13)।

मसीह के दूसरे आगमन पर प्राकृतिक इस्राएल राष्ट्र (यहूदी राष्ट्र) रूपान्तरित नहीं होगा, क्योंकि पुराने नियम में की गयी भविष्यद्वाणी (ज़कर्याह 12:10) मसीह के दूसरे आगमन पर पूरी नहीं होगी, वरन वह तो नये नियम के प्रकाशन के अनुसार (यूहन्ना 19:18,37) *पहले ही यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर पूरी हो चुकी है।*

फिर भी, यीशु यहूदियों से कहते हैं कि उनके पास विश्वास में आने का उस तरीके को छोड़ और कोई तरीका नहीं है जिससे गैर यहूदी विश्वास में आते हैं। "अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ से कहा,'तुझे नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है'। क्योंकि जो कोई विश्वास नहीं करता है वह पहले ही दोषी ठहर चुका है....जो कोई पुत्र को ग्रहण नहीं करता,वह कभी जीवन को देख नहीं पाएगा, क्योंकि वह परमेश्वर के क्रोध का सामना करेगा।" (यूहन्ना 3:7,18,36)!

11:26-27

***प्रश्न 3.* रोमियों 11: 26-27 में भविष्यद्वाणियों को कैसे देखा जाना चाहिए?**

ध्यान दें।

(1) पुराने नियम में ये भविष्यवाणियाँ यीशु मसीह के प्रथम आगमन का उल्लेख करती हैं।

लिखित पुराने नियम की भविष्यद्वाणियाँ जो रोमियों 11:26-27 में उद्धृत की गई हैं, पहली बार मसीह के आने पर इस्राएल में विश्वासियों के उद्धार का उल्लेख करती हैं। मसीहा-उद्धारकर्ता का कार्य नास्तिकता को याकूब से दूर करना होगा। रोमियों 11:26ब में पौलुस पुराने नियम से एक विशिष्ट बाइबल वचन उद्धृत नहीं करता है, लेकिन कुछ पुराने नियम बाइबल के वचनो का एक सारांश उद्धरण बनाता है।

मसीहा-उद्धारकर्ता के सपने पहले आगमन के दौरान:

- सिय्योन से आया हुआ (यूनानी: इक सियोन) (जो यहूदा से है) (मीका 5:2; मत्ती 2:6)।
- सिय्योन में आना (यशायाह 59:20 से इब्रानियों का पाठ; तुलना करें. मत्ती 10:5-8)।
- सिय्योन (सिय्योन के लिए) के लिए आया और याकूब से नास्तिकता को दूर किया।
- उनके साथ एक वाचा बाँधो। "यह उनके साथ मेरी वाचा है" (यशायाह 59:21)।

(2) ये भविष्यद्वाणी यीशु के प्रथम आगमन के दौरान पहले ही पूरी हो चुकी थीं।

पुराने नियम के उद्धरणों में जो भविष्यद्वाणी की गई थी, वह अंत समय में पूरी नहीं होगी, क्योंकि यह मसीह के आने से पहले पूरी हो चुकी है। मसीहा-उद्धारकर्ता:

- बैतलहम में पैदा हुआ था और इसलिए सिय्योन (इस्राएल) से आया (मत्ती 2:6; यूहन्ना 4:22)।
- इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया था, लेकिन उन्होंने (स्वागत) उसका अभिवादन नहीं किया (मत्ती 15:24; यूहन्ना 1:11)।
- इस्राएल के लिए आया, "अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए" (मत्ती 1:21; 10:6; लूका 19:10; गलातियों 4:4-5), लेकिन बहुत से "पीछे हट गए और अब उसका अनुसरण नहीं करते" (यूहन्ना 6:66)।
- उसने इस्राएल के घराने और यहूदा के घर के साथ एक नई वाचा बांधी (यिर्मयाह 31:31-34; मत्ती 26:28; इब्रानियों 8:6-13), लेकिन इस्राएल का घर वाचा में नहीं रहा, "इसलिए वह उनसे दूर हो गया" (इब्रानियों 8:9)।

ये भविष्यवाणियाँ बताती हैं कि इस्राएल का उद्धार एक या दूसरे सांसारिक शत्रु से मुक्ति या उद्धार नहीं होगा (उदाहरण के लिए, यीशु के समय में रोमियों, या अंत समय में विरोधी या उसकी सेना) (प्रकाशितवाक्य 19:19)), लेकिन *उनकी नास्तिकता और पापों से मुक्ति या उद्धार है!* इन भविष्यद्वाणियों में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस बारे में सोचा था कि यीशु मसीह अपने पहले आगमन पर क्या करेगा (1 पतरस 1:9-12) और न कि यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर क्या करेगा!

अपने दुसरे आगमन पर यीशु मसीह "सिय्योन से धरती पर नहीं आएगा वरन स्वर्ग से आएगा" (यूनानी: एपी 'आउरनौ) (1थिस्सलुनीकियों 4:16; प्रकाशितवाक्य 19:11)। और उसके दुसरे आगमन पर नास्तिकता से मुक्ति और पापो से क्षमा संभव नहीं होगा! "पृथ्वी के सभी राष्ट्र शोक करेंगे" क्योंकि वे अब परिवर्तित नहीं हो पाएंगे (मत्ती 24:30,39-41,50-51; मत्ती 25:10-13, 30, 41-46; प्रकाशितवाक्य 6:12-17)।

पौलुस रोमियों के अपने पत्र में विषय से विचलित नहीं होते हैं, अर्थात्, "केवल विश्वास द्वारा न्यायसंगतता"। रोमियों अध्याय 9-11 में वह बताते हैं कि विश्वास द्वारा न्यायसंगतता ऐतिहासिक था:

- *पुराने नियम की अवधि के दौरान* यहूदियों को केवल विश्वास द्वारा उचित ठहराया गया था (रोमियों 4:1-8; 9:25 से 10:8; 10:16-18)।
- *नए नियम की अवधि के दौरान* (जिस अवधि में यीशु और पौलुस रहते थे) यहूदी केवल विश्वास के द्वारा उचित थे (मरकुस 1:14-15; यूहन्ना 3:16, 18, 36; 6:29,40; रोमियों 10:9-15)।
- *बाद की सभी शताब्दियों तक*, मसीह के दूसरे आगमन तक, यहूदी केवल विश्वास के द्वारा उचित होंगे (रोमियों 11:23,26-27)। यहूदियों के लिए भी कोई और रास्ता नहीं बचा है! "सुसमाचार सभी के उद्धार के लिए परमेश्वर की एक शक्ति है, जो विशवास करता है (मत्ती 10:5-6; प्रेरितों 17:1-4) पहले यहूदियीं के लिए, फिर अन्यजातियों के लिए" (रोमियों 1:16; मत्ती 28:19; प्रेरितों 13:46-47)।
- *और मसीह के दूसरे आगमन* (इस्राएल का प्राकृतिक राष्ट्र) *पर* यहूदी परिवर्तित नहीं होंगे और बचाये नहीं जायेंगे। नया नियम प्रकाशितवाक्य स्पष्ट रूप से सिखाता है कि जकर्याह 12:10 (520-518 ई.पू.) की यह भविष्यद्वाणी ("मैं दाऊद के घर और यरूशलेम के निवासियों पर अनुग्रह और दुःख की भावना से बाहर आऊंगा। वे करेंगे। जिन्होंने मुझे छेदा है, वे मुझे देखेंगे और उसके लिए शोक करेंगे...") मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख नहीं करता है, लेकिन मसीह के पहले आगमन का: उसके क्रूस (यूहन्ना 19:37), लोगों के संकट और दुःख का (लूका 23:48-49; यूहन्ना 20:11 ; प्रेरितों 2:37), पिन्तेकुस्त पर पवित्र आत्मा की चौकी (तुलना करें. प्रेरितों 2:16-17) और मसीहियों की

प्रार्थना (प्रेरितों 4:23-31; 12:5,12)!

इसलिए सुसमाचार को अब यहूदियों के लिए भी घोषित किया जाना चाहिए, ताकि वे यीशु मसीह पर विश्वास कर सकें और बच सकें। "अब परमेश्वर के एहसान का समय है; अब मुक्ति का दिन है "(2कुरिन्थियों 6:2)। प्रेरितों ने यही किया: उन्होंने यहूदियों को सुसमाचार सुनाया और उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाया (प्रेरितों 2:14,38; 3:12,19; 4:8-12; 5:14, 20, 28; 6:7; 8:4; आदि)। और आज मसीहियों को भी ऐसा करना चाहिए।

11:28

प्रश्न 4. **यहूदियों को "शत्रु " और "प्रिय" कैसे माना जाना चाहिए?**

ध्यान दें। इस्राएल ("इस्राएल की पूर्णता") में चुनाव विश्वासियों की पूरी संख्या का गठन करने वाले लोग एक ओर "शत्रु" माने जाते हैं और दूसरी ओर "प्रिय" के रूप में। संदर्भ (रोमियों 11:30-31) से पता चलता है कि पौलुस "इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र" (जिसे कुछ लोग "परमेश्वर का प्रिय" मानते हैं) की बात नहीं कर रहे हैं। वह "इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के सभी लोगों के बारे में बोल रहा है जो सच्चे इस्राएल का गठन करता है", अर्थात, उन सभी यहूदियों के बारे में जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (तुलना करें. रोमियों 9:6)। परमेश्वर ऐसे यहूदियों को "घृणा" करना जारी रखता है (जो कि नहीं है) (और गैर-यहूदियों) (रोमियों 9:13) जो गलत करते हैं, परमेश्वर को अस्वीकार और हिंसा को प्रेम करना जारी रखते हैं (व्यवस्था. 7:7-8; मलाकी 1; 2-3; रोमियों 9:13; तुलना करें भजन 5:6; 11:5)।

रोमियों 11:28 में "शत्रु" और "प्रिय" लोग एक ही समूह के लोग हैं। जैसा कि दुनिया के इतिहास में बार-बार होता है, इस समूह के लोग शुरू में मसीह के सुसमाचार के और मसीहियों के "शत्रु" हैं। लेकिन जब परमेश्वर ने गैर-यहूदियों पर दया करना शुरू किया, तो ये "दुश्मन" भी यीशु मसीह की ओर मुड़ गए और मसीह और मसीहियों के लिए "प्रिय" बन गए।

गैर-यहूदियों के लिए भी यही सच है। जब अन्यजाति अभी भी "दुश्मन" थे, उन्हें यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर के साथ मिलाया गया था (रोमियों 5:9-11)। चुने हुए, बुलाए गए और न्यायप्रिय लोगों के रूप में, वे अब "प्रिय" बन गए हैं (रोमियों 8:30-39)। इसके अलावा प्रेरित पतरस ऐसे लोगों की बात करता है जो लोग कभी नहीं थे, लेकिन अब परमेश्वर के लोग हैं" (1पतरस 2:9-10)।

पूर्व "शत्रुओं" को पितृसत्ता के आधार पर "उनके रूपांतरण" के बाद "प्रिय" कहा जाता है, अर्थात्, क्योंकि परमेश्वर ने पितृसत्ता के अपने वादे को पूरा किया, वह पितृसत्ता के वंशजों (उत्पत्ति 22) पर विश्वास करने के लिए अपने वादे को भी पूरा करेगा: 17-18; गलातियों 3:29)। अपने रूपांतरण से पहले प्रेरित पौलुस के जीवन की "शत्रु " के रूप में करें (26:9-11) उसके रूपांतरण के बाद (26:19-23)के जीवन के साथ "प्रिय " के रूप में तुलना करें।

11:29

प्रश्न 5. **इस कथन को: "परमेश्वर के उपहार और उसकी पुकार अखण्डनीय हैं" कैसे समझा जा सकता है?**

ध्यान दें। शब्द इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए परमेश्वर के प्यार का उल्लेख शब्दों द्वारा नहीं कर सकते। यह कुछ लोगों के स्पष्टीकरण का उल्लेख नहीं कर सकता है जो कहते हैं कि शुरू में परमेश्वर ने सभी यहूदियों को बचाने के लिए सभी युगों

में सभी यहूदियों के दिलों की कठोरता को सहन किया (जबकि एक ही समय में उन्होंने कठोर गैर-यहूदियों को नाश करने की अनुमति दी थी)। यह स्पष्टीकरण यीशु के यहूदियों के लिए बयान के साथ एक संघर्ष है। "तुमको मेरे कहने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए," तुमको फिर से जन्म लेना चाहिए! जो कोई भी विश्वास नहीं करता है, वह पहले से ही तिरस्कृत है *और तिरस्कार करता है* (अपूर्ण वर्तमान काल)।... जो कोई भी पुत्र को अस्वीकार करता है, वह *निश्चित रूप से* जीवन को नहीं देखेगा, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध उस पर *निरंतर* बना रहता है "(वर्तमान काल)। (यूहन्ना 3:7, 18, 36)।

बाइबल सिखाती है कि यहूदियों को नहीं, बल्कि अन्यजातियों को भी बचने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा। बाइबल सिखाती है कि यीशु ने यहूदियों से कहा, "कई लोग पूर्व और पश्चिम से आएंगे, और स्वर्ग के राज्य में अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ दावत में उनके स्थान लेंगे। लेकिन जो राज्य के हैं (यहूदियों के वंशज) उनको अंधेरे में बाहर फेंक दिया जाएगा, जहां रोना और दांत काटना होगा। "(मत्ती 8:11-12)। "परमेश्वर का राज्य आपसे (जो कि यीशु मसीह को अस्वीकार करने वाले यहूदियों से) ले लिया जाएगा और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो इसका फल पैदा करेंगे" (अर्थात, परमेश्वर के नए नियम के लोग जो यहूदियों से मिलकर बने हैं) गैर-यहूदी जो यीशु मसीह (मत्ती 21:42-44) को मानते हैं

(1) परमेश्वर की स्थिर बुलाहट।

शब्द "अपरिवर्तनीय" (ग्रीक: ametamelétos) का अर्थ केवल यह नहीं है कि परमेश्वर का "उन लोगों के संबंध में कोई पछतावा नहीं है जिन्हें उन्होंने चुना है या बुलाया है, बल्कि यह भी कि परमेश्वर उनके चुनाव, बुलाहट, औचित्य या महिमा" को याद (" नहीं निकलेगा) नहीं करेगा।, (रोमियों 8:29-30,33)[9]!

रोमियों के अध्याय 9 में कहा गया है: परमेश्वर के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए दिए गए कुछ विशेषाधिकारों के संबंध में परमेश्वर का चुनाव (रोमियों 9:4-5) के चुनाव के लिए समान नहीं है (2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 2:9-10)! परमेश्वर का आह्वान हमेशा प्रभावी है, क्योंकि परमेश्वर का आह्वान उनके चुनाव पर आधारित है और हमेशा उनके द्वारा चुने गए लोगों के औचित्य और गौरव की ओर जाता है (रोमियों 8:29-30; 9:11)!

परमेश्वर का आह्वान न केवल मसीहियों द्वारा सुसमाचार के बाहरी उद्घोषणा का उल्लेख करता है बल्कि आंतरिक भी, लोगों के दिलों और जीवन में पवित्र आत्मा की बुलाहट हमेशा प्रभावी रहती है। यह मसीहियों द्वारा सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से होता है (तुलना करें रोमियों 1:5-7) और हमेशा प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करने की ओर जाता है (2थिस्सलुनीकियों 2:13-14)! इस प्रकार परमेश्वर का आह्वान हमेशा "अपरिवर्तनीय" होता है - इसे कभी भी रद्द नहीं किया जाएगा (वापस लेना, हटाना)! क्योंकि पुराने नियम और नए नियम दोनों यहूदियों के एक हिस्से के बारे में बोलते हैं जो अविश्वासी और अवज्ञाकारी बने रहते हैं, परमेश्वर का आह्वान केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के भीतर यहूदियों के चुने हुए (चुने हुए) हिस्से को उनके बुलावे का उल्लेख कर सकता है।

परमेश्वर चुने हुए यहूदी विश्वासियों और चुने हुए गैर-यहूदी विश्वासियों से अपनी बुलाहट को कभी वापस नहीं लेता है। यीशु मसीह ने वादा किया था, "मैं उन्हें (अर्थात् मेरी भेड़ें) अनंत जीवन देता हूँ, और वे कभी नष्ट नहीं होंगे; कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता। मेरे पिता ने मुझे (जो भेड़ है) दिया है, वे सभी (अन्य प्राणियों) की तुलना में अधिक उत्कृष्ट हैं। और कोई भी मेरे पिता के हाथ से उन्हें (झुंड) नहीं छीन सकता (यूहन्ना 10:28 और वचन का सही अनुवाद 29)। यह शाश्वत जीवन का चौगुना आश्वासन है!

[9] यूनानी लेक्सिकन ऑफ़ बौएर, अरंड्ट और गिंगरिच।

(2) परमेश्वर का अटल उपहार।

इसी तरह परमेश्वर के उपहार "अटल" हैं परमेश्वर उन्हें कभी दूर नहीं ले जाते हैं। ये उपहार हालाँकि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के विशेष विशेषाधिकारों का उल्लेख नहीं कर सकते हैं (रोमियों 9: 4-5), क्योंकि ये उपहार यीशु मसीह के पहले आगमन पर पूर्णता में चले गए हैं। मसीह के पहले आगमन के बाद, "अन्यजाति विश्वासी यहूदी विश्वासियों के साथ एक साथ वारिस बन गए हैं (पुराने नियम के यहूदी के साथ वादे को साझा करेंगे) (इफिसियों 2:11-22; 3:2-6; तुलना करें. 2 कुरिन्थियों 1:20)।

"वरदान" को परमेश्वर के विशेष वरदान के रूप में देखें:

- पवित्र आत्मा (प्रेरितों. 2:38; 15:7-11)
- विश्वास (प्रेरितों 13:48; फिलिप्पियों 1:29; 2पतरस 1:1)
- आशा, प्रेम (रोमियों 5:5)
- शांति जो सभी समझ से गुजरती है (गलातियों 5:22; फिलिप्पियों 4:6-7)
- अनन्त जीवन (यूहन्ना 10:28), आदि।

यह सभी वरदान, जो पवित्र आत्मा ने अविश्वासियों औरअनाज्ञाकारी लोगों को नहीं, बल्कि चुने हुए विश्वासियों को प्रदान किए हैं, (प्रेरितों 5:32), लेकिन केवल उनके लिए चुने हुए विश्वासियों को (इफिसियों 1:3)।

रोमियों 11:30-31 में पौलुस ने बताया कि कैसे ये अटल उपहार और बुलाहट पूरे इतिहास में चुने हुए अन्यजातियों और चुने हुए यहूदियों से बदल जाते हैं।

11:32

***प्रश्न 6.* इस कथन को "परमेश्वर ने उन सभी को कैसे अनाज्ञा पर बाध्य किया है ताकि उन पर दया कर सके" कैसे समझा जा सकता है?**

ध्यान दें।

रोमियों 11:32 कहते हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा उल्लंघन का बन्दी बना कर रखा था, इसलिए वह सब पर दया करे। क्योंकि अनाज्ञा के कारण परमेश्वर ने *हमेशा हमेशा के लिए* (अनोरिस्ट) कैद (एक साथ बंद / बंद) (ग्रीक: संकलिओ) (ग्रीक: टॉस पॉण्टस) किया , ताकि वह उन सभी के लिए दया कर सके।" उसने उन सभी को एक ऐसी स्थिति में डाल दिया जहाँ वे (अपने पापी स्वभाव से) अनाज्ञाकारी होने के लिए मज़बूर थे "या" उसने उन सभी को अवज्ञा के लिए दिया (तुलना करें) रोमियों 1: 24,26,28)।

वचन "के लिए" शब्द के साथ शुरू होता है: और और पद्यांश को संक्षेपित करता है रोमियों 11: 25-32। यह "सभी लोगों" के साथ "अन्यजातियों की पूर्णता" (रोमियों 11:25) और "सभी इसराइल" (रोमियों 11:26) या "इसराइल की परिपूर्णता" (रोमियों 11:12) से संबंधित है।

जैसे रोमियों 5:18 में "सभी" (ग्रीक: पास) शब्द को उसके संदर्भ के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए (रोमियों 5:17), इसलिए रोमियों 11:32 में "सभी" शब्द को उसके संदर्भ में समझाया जाना चाहिए संदर्भ (रोम 11:25-32)।

पौलुस "सभी लोगों को प्राकृतिक अन्यजातियों के राष्ट्रों" के बारे में नहीं बताता है और यह भी कि "इसराइल के प्राकृतिक यहूदी राष्ट्र के सभी लोग" के बारे में नहीं। वह "सार्वभौमिक मोक्ष" की बात नहीं करता है जो कहता है कि सभी लोग जो कभी रहते थे, अंततः बच जाएंगे। वह "सभी चुने हुए विश्वासियों को अन्यजातियों के देशों ("अन्यजातियों की पूर्णता") और "सभी यहूदियों के बीच से चुने हुए विश्वासियों" ("सभी इस्राएल") के बारे में बात करता है। ये सभी लोग अपनी प्राकृतिक ज़िद्दी अवस्था में थे:

- अनाज्ञाकारिता के कारावास में बंद (रोमियों 11:32; इफिसियों 2:2)
- पापियों (रोमियों 3:23)
- स्वभाव से कोई धमी नहीं (रोमियों 3:10)
- अपराधी (रोमियों 5:18)।

यहाँ शब्द "सभी" *सार्वभौमिक* है!

लेकिन सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से परमेश्वर की धार्मिकता को दिया गया है:

- सभी यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं (रोमियों 1:16-17)
- सभी लोगों को परमेश्वर का अनुग्रह और धार्मिकता का प्रचुर प्रावधान प्राप्त हुआ है (रोमियों 3:24; 5:17-18)

यहां "सभी" शब्द चुनावी विश्वासियों तक *सीमित* है, जो विश्वास के माध्यम से यीशु मसीह के लिए बंधे हुए हैं!

पौलुस के शब्दों पर ध्यान दें: "सभी जो इस्राएल से उतारे गए हैं वे इस्राएल नहीं हैं" (रोमियों 9:6)।

- पहला "इस्राएल" सार्वभौमिक है: "शरीर के अनुसार इस्राएल" (ग्रीक: इस्राएल काटा सर्क्स), प्राकृतिक इस्राएल, यहूदी राष्ट्र (1 कुरिन्थियों 10:18)।
- लेकिन दूसरा इस्राएल "परमेश्वर का इस्राएल" (यूनानी: इस्राएल तो थेओ) तक सीमित है, जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं, जो मसीह में एक नई रचना है (गलातियों 6:14-16)।

11:33-36

***प्रश्न 7.* पौलुस अपने स्तुति गान में क्या कहता है।**

ध्यान दें।

रोमियों 11:33-36 एक स्तुतिगान है। परमेश्वर के उद्धार की योजना के बारे में विचार करते हुए, पौलुस के मन से परमेश्वर के अथाह बुद्धि और ज्ञान के स्तुति और प्रशंसा से भर जाता है।

(1) पौलुस विशेषतौर पर रोमियों 11:25-26 और रोमियों 11:30-32 के बारे में विचार करता है।

ये पद "विश्वास करने वाले यहूदियों और विश्वास करने वाले गैर यहूदियों अर्थात अन्यजातियों के बीच पारस्परिक निर्भरता को दर्शाता है। ये पद यह भी दर्शाते हैं कि परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों की संयुक्त "परिपूर्णता" के द्वारा अपनी महिमा भी करेगें।

(2) पौलुस इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि बाइबल का परमेश्वर उद्धार का स्रोत है।

परमेश्वर की ओर से। परमेश्वर ही उद्धार की योजना के सृजनहार हैं। उसी ने यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों को चुन लिया है ताकि वे स्वयं उससे जुड़ सकें (रोमियों 8:29-30)।

परमेश्वर के द्वारा। परमेश्वर ही उद्धार की योजना का अनुप्रयोग करने और उसे पूरा करने वाले हैं(रचयिता और पूर्ण करने वाले) **परमेश्वर के लिए।** उद्धार की योजना की मंजिल स्वयं परमेश्वर हैं। विश्वासियों को परमेश्वर की महिमा के लिए सृजा गया और उद्धार दिया गया है। (तुलना करें यशायाह 43:7; कुलुस्सियों 1:16)।

"आमीन" कहने के द्वारा पौलुस परमेश्वर की योजना के प्रति अपनी व्यक्तिगत, औपचारिक और उत्तेजनापूर्ण स्वीकृति प्रदान करता है।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 11:1-36 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 11:1-36 में संभावित अनुप्रयोगों के उदहारण।

11:1. इस बात को समझें कि परमेश्वर ने पुराने नियम के उद्धार की योजना को रद्द नहीं किया है। वह इस्राएल राष्ट्र में से विश्वास करने वाले नागरिकों को उद्धार करता है। उसके बाद परमेश्वर ने गैर यहूदी राष्ट्रों में से भी विश्वासियों को लेकर उनके साथ जोड़ा है। इस तरह से परमेश्वर ने सारे संसार के हर एक राष्ट्र में से विश्वासियों को लेकर पुराने नियम के चुने हुए लोगों में जोड़ दिया।

11:4. भरोसा रखें कि आपके देश में प्रचण्ड सताव की अवस्था में भी, परमेश्वर के ऐसे लोग हैं, जो बाइबल में प्रगट किये गये परमेश्वर को छोड़ और किसी के सामने अपने घुटने नहीं टेकेगें।

11:5-6. परमेश्वर के अनुग्रह ने लोगों द्वारा व्यवस्था का पालन करने या धार्मिक व भले कामों को करने के द्वारा अपने आपको बचाने के साथ प्रयासों को निरर्थक कर दिया।

11:11. याद रखें कि जब आपके देश में कोई विशेष वर्ग का समूह बाइबल में प्रगट किये गये परमेश्वर से कुछ समय के लिए दूर हो जाता है, तो परमेश्वर उसी समय व परिस्थिति को किसी दूसरे समूह को उद्धार देने के लिए इस्तेमाल करते हैं!

11:14. इसलिए यहूदियों, मुसलमानों और मसीहियों तथा अन्य धर्म समूहों से नफ़रत करने की बजाय मसीह के अनुयायियों को सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए और सुसमाचार को अपने जीवन में इस तरह से लागू करना चाहिए जिससे कि शत्रुओं को उनके रूपान्तरित और आकर्षक जीवन को देखकर जलन हो ओर वे यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनने और पढ़ने के लिए प्रेरित हो जाएं।

11:18. अन्यजातियों में से आये विश्वासियों को कभी भी उन यहूदियों को लेकर खुश नहीं होना चाहिए जिनका सम्बन्ध अविश्वास के कारण परमेश्वर से टूट गया है। उन्हें सर्वदा यह याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने अपनी वाचा का प्रारम्भ अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ किया था।

11:20-23. केवल एक ही पैमाना है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के पवित्र लोगों का भाग बन सकते हैं अर्थात यीशु मसीह पर विश्वास करना। और परमेश्वर से रिश्ता टूटने का भी केवल एकमात्र आधार यीशु मसीह पर विश्वास न करना ही है।

11:24. याद रखें कि प्रायः "पुस्तक के लोग" (अर्थात, यहूदी, नामधारी मसीही और मुस्लिम) यीशु मसीह पर विश्वास करने के नज़दीक हैं और वे तैयारी के साथ यीशु मसीह की ओर फिर जाएगें।

11:25. मसीहियों को परमेश्वर के इस भेद को जानना चाहिए कि उसने अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाने के लिए यहूदियों का इस्तेमाल किया और वह यहूदियों तक सुसमाचार पहुंचाने के लिए अन्यजातियों का इस्तेमाल करता है। अन्त में, संसार भर से अनगिनत लोग यीशु मसीह के पीछे हो लेगें।

11:28. याद रखें कि जो लोग आज आपके दुश्मन हैं वे आने वाले समय में आपके प्रिय भाई व बहन बन सकते हैं।

11:30. याद रखें कि यदि परमेश्वर ने आप को यीशु मसीह में उद्धार के निमित्त बुलाया है तो वह अपनी बुलाहट से पीछे नहीं हटेगा। जब परमेश्वर ने आपको विश्वास, प्रेम और आशा प्रदान की है तो, वह उन वरदानों को वापस नहीं लेगा।

11:31-36. याद रखें कि जितने भी लोगों ने आज उद्धार पाया है वे कभी अनाज्ञाकारी और बुरी तरह से भटके हुए थे। इसलिए घमण्ड न करें, वरन परमेश्वर का धन्यवाद और उसकी बढ़ाई करें कि वह हमारे उद्धार को बनाने वाला और उसे पूरा करने वाला है।

2. रोमियों 11:1-36 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदारहण।

मैं दृढ़ता के साथ विश्वास में होकर चलते रहना चाहता हूं। तब मुझे इस बात का बिल्कुल भी डर नहीं होगा कि परमेश्वर मुझे अपने लोगों में से निकाल देंगें।

मैं बार बार प्रभु का धन्यवाद देता हूं कि वह ही मेरे उद्धार की योजना का स्रोत और उसे पूरा करने वाला है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 11:1-36 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिये**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 11:1-36 में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 1,2,4,10** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। **(3) परमेश्वर की सामर्थ्य, यशायाह 41:10।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 17:7-10 में पाए जाने वाले **"अयोग्य दास" के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।